देश में अभी फिल्म लिटरेसी की आवश्यकता: रत्नोत्तमा सेनगुप्ता

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित छह दिवसीय साहित्योत्सव के पांचवे दिन के मुख्य आयोजनों में चार परिचर्चाएँ, इंडो कजाक लेखक सम्मिलन,पूर्वोत्तरी,एलजीबीटीक्यू और राष्ट्रीय संगोष्ठी थी। परिचर्चाओं के विषय थे सिनेमा और साहित्य,भारत में आदिवासी समुदायों के महाकाव्य, डिजिटल दुनिया में प्रकाशन,मीडियाए न्यू मीडिया और साहित्य। सिनेमा और साहित्य परिचर्चा के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध तमिल सिने गीतकार एवं लेखक वैरमुत्तु थे तथा इसमें रत्नोत्तमा सेन गुप्ता की अध्यक्षता में प्रख्यात पत्रकार अजय ब्रह्मात्मज, विनोद भारद्वाज, अजित राय और प्रदीप सरदाना शामिल हुए। अपने अध्यक्षीय भाषण में रत्नोत्तमा सेनगुप्ता ने कहा कि देश में अभी फिल्म लिटरेसी की आवश्यकता है। इसके बेहतर होने पर ही साहित्य और सिनेमा के रिश्तों में उल्लेखनीय सुधार और बदलाव आएगा। मीडिया न्यू मीडिया और साहित्य विषयक परिचर्चा का उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात पत्रकार वेद प्रताप वैदिक को देना था,लेकिन कल अचानक हुए उनके स्वर्गवास के कारण सभी ने उन्हें एक मिनट का मौन रखकर श्रृद्धांजलि दी और आलोक मेहता की अध्यक्षता में सईद अंसारी, अंकुर डेका,प्रभात रंजन, बालेदु शर्मा दाधीच ने अपने विचार व्यक्त किए। द्वितीय सत्र मुकेश भारद्वाज की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें इरफान,ओंकारेश्वर पांडेय, शेखर जोशी एवं मा शर्मा ने अपने-अपने विचार प्रकट किए। सभी का मानना था कि न्यू मीडिया से संपर्क और संचार के नए रास्ते खुले हैं लेकिन उसमें विषय की विश्वनीयता को परखने के लिए कोई उचित मापदंड न होने के कारण अर्थ का अनर्थ होने की संभावना भी बनी रहती है। डिजिटल दुनिया में प्रकाशन विषयक परिचर्चा का उद्घाटन प्रख्यात प्रकाशक अशोक घोष ने किया और जिसमें रमेश के. मित्तल एवं निर्मलकांति भट्टाचार्जी ने दो सत्रों की अध्यक्षता की। कथासंधि कार्यक्रम में आज प्रख्यात उर्दू कथाकार अब्दुस समद से बातचीत की गई। उन्होंने अपनी कहानी दीवार पर लिखी तहरीर प्रस्तुत की और उसकी सृजनात्मक यात्रा का विवरण श्रोताओं को दिया।